ओम शांति,

संगमयुग आते ही हम सभी के पुरे ८४ जन्म सफल हो गए, थिक है? पुरे कल्प कि इस यात्रा में लास्ट में परमातम मिलन हमारी जन्म जन्म कि थकान को भी मिटने वाला बन गया सभी को ऐसा लगता है ना? सफल हो गया सब कुछ, कुछ भी हुआ हो, कैसा भी रहा हो कलयुग में लेकिन अंत बहोत सुंदर हो गया। लोग तो कहते है शुरआत अच्छी हो जाएँ तो आधा काम पूरा हो गया यह भी बहोत आची बात है लेकिन अंत बहोत सुखद हो जाएँ तो पूरा कल्प सफल होगया। तो हम सभी अपने भाग्य को देखकर बहोत प्रसन्न हो जाया करें **बाबा कहते थे रोज सवेरे उठे कर एक बार अपने श्रेस्ठ भाग्य का गुणगान स्वयं करो दिल प्रसन्नता से भर जाएगा, कितना सुंदर भाग्य मिला है हम सभी को। सब से बड़ा भाग्य तो येही कि भगवान् सामने**, लोग आँख खोलते है तो क्या मिलता है उठते ही? समस्याएं, टेंसन आज फिर यह है और हम जब सवेरे उठते है तो उठते ही हमारा दिव्य नेत्र उसे देखता है जिसे देखने के लिए हम युगो से इन्तेजार करते थे।

तो बहोत सुंदर भाग्य हम सब को प्राप्त हुआ है। हमारी श्रेस्ठ स्मृतियाँ हमारे अंदर कि सोयी हुई चीजो को जागृत करती है सभी को यह बात बार बार अपने को याद दिलानी है कि हमारे ही बहोत कुछ समाया हुआ है। अंदर किसके? आत्मा के अंदर तो है ही पर हमारे ब्रेन में, हमारे मन में हमारे अंतर मन में सब कुछ समाया है हम उसे जागृत करें। हम आत्म चेतना को जागृत करें यह बहोत बड़ी बात हो जाती है कि जैसे चेतना सो जाती है, जो कुछ हमारे पास है उसे भी हम भूल जाते है छोटी मोटी संसार के उलझनो में, छोटे मोटे संसार कि आयी हुई टेंसन में हम उन चीजो विस्मृत कर बैठते है जिनकी याद हमारे जीवन को उमंग उत्साह और ख़ुशी से भर्ती है। सभी आत्म जागृति लाया करें कुछ ऐसी बातें अपने पास नोट करें जिससे हमारी अंदर जागृति रहे, स्मृतियाँ फ्रेश रहे।

आज हम चर्चा करेंगे एक बहोत अच्छी बात कि जिसकी प्रेरणा बाबा आखरी मुरली में देकर गए है चारो सब्जेक्ट के अनुभवों के अथॉरिटी बनो। यह गहन सब्जेक्ट है चारो सब्जेक्ट कि सम्पूर्णता ही हमें सम्पूर्ण बनाएगी, चारो सब्जेक्ट में फूल मार्क्स होंगे तो फूल पास। लौकिक में भी किसी के मैथमेटिक्स में १०० आजाते है कई बार और इंग्लिश में चालीस ही रेह जाते है कोई कोई तो फ़ैल हो जाते है। स्वामी रामतीर्थ का आपने नहीं सुना होगा MA माँ उसने पंजाब यूनिवर्सिटी को टॉप किया, पंजाब यूनिवर्सिटी उस समय उधर कि एक ही थी जिसके अंतर्गत सारे कॉलेज आजाते थे लेकिन इंग्लिश में वोह फ़ैल हो गया। वक के सामने यह बहोत बड़ी प्रॉब्लम थी कि यह स्टूडेंट इंग्लिश में फ़ैल और सब सब्जेक्ट में सब से ज्यादा मार्क्स है इसके। मैथमेटिक्स में बहोत होशियार था वोह क्या किया जाएँ? तब तो यह नहीं था ना कि फिर से पेपर दे दो, एक सब्जेक्ट में कम रेह गए तो फिरसे दे दो। लौकिक में हम सब देखते है कई स्टूडेंट्स कई सब्जेक्ट में बहोत एक्सपर्ट होते है, हमारे एक भाई कि एक कन्या मिली मुझे परिवार ज्ञान में पूरा उसके हर सब्जेक्ट में ९० से अधिक मार्क्स थे।

तो हर सब्जेक्ट में फूल मार्क्स लेना, एक और चीज मेने देखि हमारे यहाँ ज्ञान सरोवर में एक यंग मेन आया छोटा ही उसने बी.टेक में उसे छे गोल्ड मेडल मिले एक सारा जो उनका कॉलेज था उसमें पहला स्थान, दूसरे पांच उनके पांच सब्जेक्ट थे पांचो में गोल्ड मेडल, तुरंत मिसाइल इंजीनियरिंग में सिलेक्शन हो गया। बिना किसी एग्जाम के छोटा ही था ज्ञान सरोवर में आया था तो ऐसे अच्छे स्टूडेंट्स गॉडली यूनिवर्सिटी में भी तो होंगे ना? जो चारो सब्जेक्ट में गोल्ड मेडल ले लें, कौन लेना चाहेंगे आप में से? माताओं के तो बहोत कम उठ रहे है। देख के हाथ नहीं उठाना क्यूंकि छोटा सब्जेक्ट नहीं है यह सर्व श्रेस्ठ बात है चारो सब्जेक्ट में गोल्ड मेडल लेना, ब्रह्मा बाबा को मिल गये, मां को भी मिल गये अब हम सब को लेने है।

चारो सब्जेक्ट में फूल मार्क्स अब हम इसपे चर्चा करेंगे, कैसे ले और कैसे हर सब्जेक्ट ही किन किन बातों के अनुभवों

को बढ़ाएं ताकि हम उनकी अथॉरिटी बन जाएँ, अनुभव हो हमें हर चीज का, हमारे बोल में हमारे अनुभवों के वाइब्रेशन्स भी बहार निकले, हमारे बोल केवल ज्ञान के आधारित ना हो, अनुभवों से भरे हुए हो जाएँ। जैसे देखो शास्त्र वाले कोई विशेष, पंडित हो शास्त्रो का जब वोह अपनी बात करते है तो कैसे अथॉरिटी से बात करते है। हमारे पास सम्पूर्ण ज्ञान है, सत्य कि अथॉरिटी है, सम्पूर्ण सत्य ज्ञान है जिन बातों कि चर्चा वेदों और दर्शनो में तनिक भी नहीं है जिनको टच भी नहीं किया गया वोह सब ज्ञान के गुह्य रहष्य हम सब जानते है। ज्ञान में फुल, सत्य में फुल, ज्ञान का प्रकाश हमारे अंदर सम्पूर्ण है बाबा ने कहा यह ज्ञान कि लाइट तुम्हे माइट देती है। पहला अनुभव हमारे पास हो ज्ञान कि लाइट हमें माइट दे रही हो, ज्ञान कि हर बात हमारे लिए शक्ति का काम कर रही हो, एक शस्त्र का काम कर रही हो, कवच का काम कर रही हो।

अब हम सभी विचार करेंगे और ज्ञान कि कौन कौन सी बातें है जिनमें हमें अनुभवों को बढ़ा कर अथॉरिटी बनना है। देखिये ज्ञान में आत्मा का ज्ञान, परम आत्मा का ज्ञान, ड्रामा का ज्ञान, कर्मो का ज्ञान और किस चीज का ज्ञान है? सभी धर्मो का ज्ञान, बहोत लम्बा चौड़ा है ना? इन सभी बातों में किन किन चीज के अनुभव करें। आत्मा के बारें में दो बातें बहोत गहरी में आपको याद दिलाऊं **बाबा ने सम्पूर्ण ज्ञान आत्मा का दिया है पहली गहरी बात सब जानते है केवल हमें याद करना है आत्मा में ८४ जन्मो का सम्पूर्ण पार्ट रिकार्डेड है सब भरा हुआ है। आत्मा सूक्ष्म उसमें सम्पूर्ण पार्ट भरा हुआ है, क्या इसको भी हम अपने अनुभवों में ला सकते है?** बड़ा मजा आएगा। आत्मा इस देह से न्यारी है, आत्मा इस देह कि मालिक है, आत्मा कर्मेन्द्रियों कि मालिक है, में आत्मा मन बुद्धि संस्कार कि मालिक हूँ, कंट्रोलर हूँ इन शरीर कि, में आत्मा शक्तिशाली हूँ, सम्पूर्ण पवित्र हूँ यह सब अनुभव। आत्मा के केवल सात गुण चर्चा का विषय ना रेह जाएँ में आत्मा शक्तिशाली हूँ, मास्टर सर्व शक्तिवान, में आत्मा परम पवित्र हूँ, देह से न्यारी हूँ। बाबा कि वोह बात फिरसे याद करलें शिवबाबा ने कहा में ब्रह्मा तन में आता हूँ तो इनके अंग अंग शीतल हो जाते है, परम पवित्र, पवित्रता का सागर जिस तन में प्रवेश करेगा उसके वाइब्रेशन्स से उनके अंग अंग शीतल हो जायेंगे। में आत्मा भी जिस तन में बैठी हूँ में भी परम पवित्र हूँ, मेरे वाइब्रेशन्स से भी मेरे अंग अंग शीतल हो जाएँ। अनुभव करना है।

मालिक हूँ, देह से न्यारी हूँ, में आत्मा इस देह में अवतरित हूँ अनेक जन्म लिए है मेने, पूरा स्वरदर्शन चक्र घूम जाएँ, जो पांच स्वरुप बाबा ने हमें दिए है उनका अच्छी तरह अनुभव हो जाएँ, यह आत्मा का अनुभव हो जाएगा। दूसरी में गहरी बात में आपको केह रहा था परमधाम में हर धर्म कि आत्माए अलग अलग सेकसन में रहती है, बड़ी गुह्यता है इसमें बहोत गुह्यता है। आत्मा कि जो मुक्त अवस्था है परमधाम कि जिसके लिए बाबा हमें बहोत प्रेरणा दे कर गए, मुक्ति और जीवन मुक्ति का अनुभव यहीं हो। हम इसका अनुभव बढ़ाएं कि जीवन में रहते हुए, परिवारों में रहते हुए हम मुक्त है? छोटा सब्जेक्ट तो नहीं है, कहने से तो काम नहीं हो जाएगा, संसार में बहोत कुछ है, हमारे पूर्व के अनेक बंधन, पाप कर्मो के बंधन आत्मा को बंधन में डाल रहे है। पकड़ा हुआ है यहीं मुक्त हो जाएँ यह अनुभव हो, लोग तो मुक्ति के लिए साधनाएं करते है और यह भी कहते है हजारो साल तपश्या करने के बाद मुक्ति प्राप्त होगी। मुक्ति में कहा जायेंगे? मेरे कइयों से चर्चा हुई कहाँ जाओगे मुक्ति में? बस एक ही उतर होता है परमात्मा के साथ परम आनंद में रहेंगे। कोई कहते है परमात्मा में लीन हो जायेंगे वोह तो हम जानते है लीन तो कोई होगा नहीं, तब तो अस्तित्व ही मिट जाएगा आत्मा का, आत्मा अविनाशी भला लीन कैसे होंगी? उसके अस्तित्व का क्या रहेगा? में पूछा करता हूँ, परमात्मा के साथ रहोगे मुक्ति में और कहते हो भगवान् यहीं है साथ तो अब भी रहते हो उसे छोड़ कर कहाँ जाओगे? तो देखिये कितना सुंदर ज्ञान बाबा ने दिया परमधाम का, ब्रह्मलोक का ज्ञान। परमधाम शब्द तो आया है, ब्रह्मलोक भी शब्द आया है, शांतिधाम भी शब्द आया है पर यह कहाँ है? यह किसी को आभाष नहीं हुआ।

तो व्यक्ति मेरे से इंटरव्यू पर बहस कर रहा था उससे जान बुज कर बहश कि केबल वाला था। केह रहा था कि आप लोग भगवान् को सर्व व्यापी नहीं मानते सब तो मानते है, तो मेने उसको सिंपल बात कही वोह अपने प्रश्न पूछते हुए केह रहा था भगवान् को मेने कहा यह क्या कर रहे हो आप? यह ऊपर को इशारा किसके लिए है? तो मनुष्य के जो नेचुरल इंस्टेंट है वही बताती है कि वोह ऊपर है, उपरवाला, कहेंगे भगवान् को याद करेंगे तो जरा गर्दन भी ऊपर चली जाती है, दृस्टि भी ऊपर, हाथ भी ऊपर, ऊँगली भी ऊपर। कितना सुंदर ज्ञान बाबा ने दिया मुक्त अवश्था में हम परमात्मा के साथ रहते है ऊपर लेकिन उसका अनुभव हमें यहीं करना है कि इस जीवन में भी हम उसके साथ रहे। हम शरीर छोड़ कर ऊपर जायेंगे उसके साथ अब उपरवालले को निचे अपने साथ रख लें मुक्त अवस्था का अनुभव ज्ञान के द्वारा। योग तो इसमें चाहिए पर ज्ञान के द्वारा। परमात्मा का ज्ञान हमें मिला है, हम यह जानते है वोह सब जगह नहीं है हमारे शरीर में नहीं है पर योगयुक्त होकर हम उसे अपने साथ रखते है ना? वही बात कितनी डिवाइन है कि वोह हमारे अंदर नहीं लेकिन हमारे साथ है। जैसे ही हम उससे योगयुक्त होते है तो उसका और हमारा साथ हो जाता है।

तो बाबा के बहोत सारे अनुभव, बाबा के ज्ञान के योग का सब्जेक्ट अलग परमातम ज्ञान हमें प्राप्त हो गया है, **कहा जाता है भगवान् को जानने के बाद और कुछ जानने कि आवश्यकता नहीं रहती। क्या हमें यह अनुभव हो रहा है कि उसे जान लेने के बाद हम ने सब कुछ जान लिया है, उसे पा लेने के बाद और कुछ पाने कि इच्छा आवश्यकता नहीं रहती क्या यह हमारा अनुभव हो गया है कि उसे पाने के बाद हम भी इतने तृप्त हो गए हो कि अंदर से आवाज आयें अब और कुछ नहीं चाहिए।** जो कुछ पाना था वोह पा लिया। यह अनुभव करना है। परमातम ज्ञान केवल सुना देने के लिए नहीं यह अनुभव हो जाएँ यदि वोह कहता है में तुम्हारे साथ हूँ, जब भी तुम याद करोगे में तुम्हारे साथ हूँ, में अपनी हजार भुजाओ कि छत्र छाया तुम्हारे सर पर लगा देता हूँ इसके अनुभव करने है।

ड्रामा का ज्ञान बहोत सुंदर। यह एक ऐसा ज्ञान है जिसका बहोत कम वर्णन शास्त्रो में आया है, बहोत कम। किसी को पता ही नहीं कि हम देवता थे, एक वेद तो पूरा देवतों कि स्तुति का है उसके हवन, उसके कीर्तन, उसके मन्त्र उन्हें यह पता ही नहीं कि देवता तुम थे। ड्रामा का सुंदर ज्ञान उसको हम यूज करके अनुभव को बढ़ाएंगे। कुछ बातों को ले लें इस ड्रामा में सब का अपना अपना पार्ट है, नो परचिंतन। अनुभव हो जाएँ परचिंतन कि आवश्यकता नहीं, ड्रामा में सब को जो पार्ट मिला है सब वही बजा रहे है यहाँ किसी का कोई दोष नहीं यह सोचते ही चित शांत हो जाएगा, स्थति बहोत सुखद हो जायेगी, फिलिंग ही सुखद हो जायेगी। यहाँ किसी का कोई दोष नहीं क्यूंकि मनुष्य को दोष दिखाते है ना? दोष माना अवगुण नहीं परिवारों में भी यह ऐसा करता है, यह मुझे दुखी करता है, इसने मुझे बहोत सताया है, यह मुझे बहोत परेशान करता है एक दूसरे के कारण जो मनुष्य असंतुष्ट हो रहा है। बहोत बड़ी चीज हो गयी है कलयुग के अंत में कि एक दूसरे के व्यवहार के कारण असंतोष बढ़ता जा रहा है। स्थूल प्राप्तियां बहोत घर भरपूर होगा लेकिन एक दूसरे के प्रति असंतुष्टता, ड्रामा को यूज करेंगे हम जो कुछ हो रहा है वही सत्य है, जो कुछ होगा वोह निश्चित है। बहोत सुंदर स्थिति हो जायेगी, अचल अडोल नो इफ़ेक्ट वाली स्थिति, जो कुछ हो रहा है वही सत्य है। जो कुछ बीत गया वोह ड्रामा में लिपट गया उसको बार बार देखने कि आवश्यकता नहीं, पांच हजार साल पहले खुलेगा नहीं। शांत कर दें चित को यह ड्रामा का यूज और ड्रामा को याद करें हम, **ड्रामा का अंतिम सुंदर सीन जब यात्रा कि समाप्ति आयी तो भगवान् हमारा मित्र बन गया, हमारी यात्रा पर हमारा साथी बन गया और कहा अपने सारे बोज मुझे दे दो।** थक गये हो बोज उठाते उठाते लाओ मांग रहा है लाओ इसको याद करें, अब वापिस जाने का समय है इसको याद करें यह ड्रामा का ज्ञान। कर्मो का गुह्य ज्ञान हमें विकर्माजीत बनादें यह नहीं ज्ञान तो हमारे पास हो यह पाप है और यह पुण्य है लेकिन पाप को छोड़ने शक्ति पुण्य को करने कि शक्ति हममें ना हो तो ज्ञान कि लाइट ने हमें माइट नहीं दी यह

कहा जाएगा। दुनिया में भी तो येही हो रहा है ना? दुर्योधन ने भी तो लास्ट में येही कहा था, मुझे पता था पाप क्या है और पुण्य क्या है लेकिन में विवश था, में कर नहीं पाया। हमारी स्थिति यह ना हो हमारी लाइट हमें माइट दे रही हो हमें पुण्य का ज्ञान है तो हम पाप से मुक्त होते जा रहे हो, हम पुण्यों का खाता बढ़ाते जा रहे हो। तो इसके पास ज्ञान होता है उसका प्रैक्टिकल जीवन होता है। हमारा प्रैक्टिकल जीवन हमारे ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरुप हो, यह है ज्ञान के सब्जेक्ट के अनुभव।

योग के सब्जेक्ट पर आजायें। क्या क्या अनुभव हों? बोलो? क्या क्या अनुभव हों? योग से हम दिल कि सफाई यानि बुद्धि कि सफाई कर दें, योग में अशरीरीपन के अनुभव जो बाबा लास्ट दिनों में बहोत अच्छी बात कहते थे कि बाबा इस शरीर में ऐसे रहते है मानो यहाँ हो ही नहीं। यह ब्रह्मा बाबा कि स्थिति थी अंतिम। हम इसका अभ्यास करें **हम शरीर में ऐसे रहते हो मानो यहाँ रहते ही नहीं ऊपर ही ऊपर, निरकारी स्थति, अशरीरीपन और निरकार दोनों सामान है लगभग इसके बहोत अच्छे अनुभव हो जाएँ।** स्वमान धारी योग का एक दूसरा स्वरुप आत्मा कि एक ऊँची स्थिति श्रेस्ठ स्वमान, हम श्रेस्ठ स्वमान धारी स्थिति का अनुभव करें। स्मृतियों से हमारी स्थिति कितनी श्रेस्ठ होती है इसके अनुभव करें, बाबा से रूह रिहान से, बाबा से बातें करके जीवन कितना आनंदित होता है इसके अनुभव करें। बाबा से बात कर के हम उससे क्या क्या पूछ लेते है इसके अनुभव करें, बिज रूप के अनुभव करें, सूक्ष्म वतन, फरिश्ता स्वरुप यह योग के अनुभव हो जायेंगे सब। आत्मिक दृस्टि, टोटल योगयुक्त जीवन स्मृति स्वरुप जीवन यह योग के अभ्यास है।

ज्ञान का सब्जेक्ट भी बहोत बड़ा लेकिन अनुभव हमारे बढ़ते है योग कि साधनाओ से। इन साधनाओ को हमें बहोत अच्छा बनाना है तो हम ध्यान देंगे यह नहीं थोडा बहोत योग कर लिया अनुभव हो जायेंगे, कैसे अनुभव होंगे योग के अच्छे? सवेरे उठके योग कर लिया कुछ लगा कुछ नहीं लगा सामको आके भी योग किया यह बहोत अच्छी बात है दोनों, सामके योग का इफ़ेक्ट सवेरे पर आएगा अवश्य। जिसको सवेरे के योग को बहोत अच्छा करना है वोह सोने से पहले यह नहीं कि टीवी देखि और चलो भाई तिन मिनट बाबा को याद कर लो सो जाते है। यह स्थिति नहीं पंद्रह बीस मिनट आधा घंटा बहोत अच्छा योग का अनुभव कर के सोना है, जिस अभ्यास में सोयेंगे सवेरे स्वतः ही वही हो जाएगा। इसपे ध्यान देना है **योग के सुंदर अनुभव तब तक नहीं होते जब तक हम कर्मयोगी ना बने, कर्मयोग के अनुभव हो उसमें हमें यह बहोत अच्छा अनुभव होगा कि परमातम शक्तियां हमारे साथ काम कर रही है।** बाबा कि मुरलीयों में आ चुकी है यह बात यदि तुम कर्म करते योगयुक्त रहो तो डबल फाॅर्स काम करेगी आत्मा कि फाॅर्स और परमात्मा कि शक्तियां। बहोत सुंदर अनुभव कर्मयोग में होगा। एक बहोत अच्छी चीज का अनुभव हमें करना है इसी संबंध में सभी ध्यान देंगे इस बात पर श्रेस्ठ स्मृति में स्थित होकर कर्म आरम्भ करना और साधारण स्मृति से कर्म आरम्भ करना दोनों में महान अंतर है। इन संकल्प का अभी प्रभाव है हम एक कर्म कर रहे है जा रहे है कर्म करने शुरुआत कर रहे है, एक संकल्प हमने किया है कोई उसका पूरा इफ़ेक्ट कर्म पर आएगा। मानलो कर्म करने से पहले ही किसी ने सोच लिया बहोत भारी काम है पता नहीं होगा या नहीं, इस संकल्प का प्रभाव कर्म पर आएगा और आपने संकल्प कर लिया भारी काम है तो क्या हुआ मेरे साथ भगवान् है, सफल होगा। यह संकल्प का इफ़ेक्ट कर्म पर आएगा और अगर श्रेस्ठ स्मृति हो जैसे में मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ या में विघ्न विनाशक हूँ, या बाबा का मुझे वरदान है सफलता विजय तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है या बाबा ने मुझे कहा है में तुम्हारे साथ हूँ। यह श्रेस्ठ स्मृतियाँ है या बाबा ने हमें कहा है बच्चे तुमने कल्प कल्प विजय पाई है अब भी तुम्हारी विजय निश्चित है यह महान स्मृतियाँ है इनसे कर्म प्रारम्भ करके देखें।

अनुभव बढ़ाएंगे जीवन में कैसे कठिन काम भी सरल होता है कठिन समस्याएं भी बिलकुल सहज पार हो जाती है।

जहाँ दीखता था कि सफलता मुस्किल है असफलता ही होगी तो असफलता सफलता में बदल जायेगी जो बाबा ने कहा असम्भव भी सम्भव में बदल जाएगा इसके अनुभव करने है। और में कुछ चीजे आपको याद दिला दूँ जिनको आप अपने अनुभवों का बेस बना लें उसके आधार पर अनुभव बढ़ाते बढ़ाते अथॉरिटी में आयेंगे **जैसे तुम सरल होंगे तो समस्याएं भी सरल हो जाएंगी।** अनुभव बढ़ाना है इसका सभी को बहोत सुंदर यह हमारे लिए महामंत्र है **तुम ईज़ी तो समस्याएं भी ईज़ी एक बात। तुम्हारी श्रेस्ठ स्थिति से परिस्थियां बदल जायेगी दूसरा सुंदर अनुभव।** परिस्थिति हम पे हावी ना हो जाएँ हम अपनी श्रेस्ठ स्थिति पे ध्यान दें परिस्थितियां स्वतः ही बदल जायेगी तीसरी बात का अनुभव। यह सब योग से जुडी हुई बातें है इसी बार बाबा कि मुरली में आ गया है जो मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहते है विघ्न और समस्याएं उनके सामने थैर नहीं सकती, इसके अनुभव होंगे ना बहोत सुंदर? जीवन सरल हो जाएगा, समस्यायों से लड़ने कि आवश्यकता नहीं रहेगी यह अनुभव हमको बढ़ाने है। एक बहोत सुंदर चीज जो बहोत बड़ा चैलेंज भी हो सकता है में बाबा के दो महावाक्य याद दिला दूँ इसमें आपको बहोत पहले बाबा ने कहा - **यदि तुम्हारी स्थिति रिफाइन हो तो तुम उतने ही समय में दस गुना काम कर सकते हो अनुभव करना है।** पिछले साल अति गुह्य बात आयी - **यदि तुम साक्षी द्रस्टा होकर रहो तो एक मास का काम एक घंटे में पूर्ण हो जाएगा।** कितनी दीप फिलोसोफी है यह, मन कि शक्तियों का इफ़ेक्ट देखना है हमें कि यदि हमारा मन पूरी तरह शांत होता है तो हमारी मन कि शक्ति जिसे साइलेंस पॉवर बाबा कहते है उससे लम्बे समय में होने वाला काम कैसे सीध्र सफलतापूर्वक सफल हो जाएगा यह अनुभव हमें करने है।

ज्ञान हम देते है एक अनुभव ज्ञान देते हुए हमें करना है बाबा का बहोत सुंदर महावाक्य है **में एक महान आत्मा हूँ इस स्वमान में स्थित होकर दूसरे को आत्मा देख कर ज्ञान दो तो तुम्हारे बोल बहोत प्रभावशाली हो जायेंगे। दूसरे व्यक्ति का अहंकार भी नष्ट हो जायेंगे** अनुभव करके देखेंगे। लोग बहश करते है बहोत ज्यादा छोटी छोटी बातों पर अगर हम इस स्वरुप में स्थित होकर ज्ञान दें तो उनका बहश करना ही समाप्त हो जाएगा इसके अनुभव करने है। ऐसी बाबा अपनी मुरलियां में बहोत बातें हम सब को केह आये है और भी कुछ बातों पर हम ध्यान देंगे।

तीसरा हमारा सब्जेक्ट है धारणाएं। धारणा में दो चीजे होती है एक गुणो कि घारणा और दूसरी है कुछ बहोत बड़ी बड़ी चीजो कि धारणाएं जैसे साक्षी भाव, जैसे न्यारापन और प्यारापन, अनाशक्त वृत्ति, वैराग्य वृत्ति, त्याग वृत्ति यह बड़ी बड़ी गुणो से ऊपर कि चीजे है। तो गुणो कि धारणा भी गुणो में हम कुछ चीजो को ले लें जो बाबा हमें सिखाते है पहला गुण सरलता। अगर सरलता को हम अपना लें तो हमारा पूरा जीवन सरलता से बीतेगा, सॉफ्ट हो जाएँ चित को भी सॉफ्ट करें, चित को भी सरल करें हल्का करें, ईज़ी लें हर बात को इसके अनुभव करेंगे। सरलचित रहने से हमारा व्यवहार कितना दिव्य होता है और जहाँ परिवारों में व्यवहार सुंदर है वहाँ परिवार कैसे होंगे? स्वर्ग जैसे। उनका घर तीर्थ बन जाएगा, जिस परिवार में सब का एक दूसरे से प्यार हो और अच्छा व्यवहार हो वोह परिवार तो स्वर्ग है ना? एक दूसरे के लिए सभी सुखदाई बन जाते है हम अनुभव करें बहोत अच्छी एक बात आपके सामने भगवान् राजी होता है सचाई पर, भगवान् राजी होता है उन पर जो सुखदाई है, सुख देव वोह तो सुकदेव था हम है सुखदेव। एक दूसरे को सुख देने वालें यह दो बातें है बहोत। भगवान् राजी है सच्चाई पर और सुख देने वालों पर अनुभव करें भगवान् राजी हो जाएँ हमसे बहोत अच्छे अनुभव कि बात होगी।

हम अपने जीवन में धारणाओ पर और ज्यादा ध्यान दें। सब से मूल धारणा हमारी पवित्रता। पवित्रता जितनी सूक्ष्म होती जायेगी समस्याएं समाप्त होती जायेगी, अनुभव करें। थोड़ी भी अपवित्रता विघ्नो का आह्वाहन करती है, अपवित्रता कि समाप्ति विघ्नो को समाप्त करती है। पवित्रता में कितनी सुख शांति है इस पर ध्यान दें, सहनशील होने से कितना आनंद आता है, निरहंकारी रहने से जीवन कि यात्रा इतनी सुखद हो जाती है। कुछ लोग ऐसे मिलते है

ज्ञान तो ले लिया लेकिन बचपन से ही पूर्व जन्मो से अहम बहोत था अब ऐसी स्थिति है कुछ नहीं कर पा रही है। एक आत्मा कि कहानी सुना दूँ आपको बहोत मेहनत कर रही है, बार बार सेवाओं में आती है घर छोड़ कर कि भाई मेरी स्थिति अच्छी हो जाएँ लेकिन हो नहीं पा रही है। आज भी मेरे से मिली वोह आत्मा अहम केवल, क्रोध नहीं जा रहा है तो मेने कहा आपको किस पर क्रोध पर करने का अधिकार है आपके परिवार में? हंसने लगी कि सूच तो यह है कि में अपने पे ही क्रोध करती रहती हूँ। में बिना मतलब चिड़चिड़ी होती रहती हूँ घर में बैठे बैठे, परिवार लम्बा चौड़ा नहीं है में चाहती हूँ यह क्रोध मेरा चला जाएँ लेकिन जा नहीं रहा है। देखिये इससे आत्मिक शक्तियां बहोत नष्ट होती है में देखा उसको सुख नहीं मिल रहा है, में उसको कुछ अभ्यास कराना चाहता हूँ नहीं हो रहे है। योग लगाओ मेने आज कई चीजे बतायी पूछा उससे यह हो सकेगा? ना यह तो नहीं होता है। यह हो सकेगा? यह भी नहीं होता है फिर मेने बहोत सरल चीजे उसको दी कि तुम यह करो तो जरा फिर तिन दिन करके मुझे बताओ। में देख रहा था कि आत्मा ईश्वरीय सुख पाने के लिए तड़प रही है पर जन्म जन्म का अहम उसको बाँध रहा है, आत्मा को स्वीकार नहीं करने दे रहा है। मेने उसको बहोत समझाया बाबा कहते है तुम एक महान आत्मा हो, हो? कहा येही तो मेरी समज में नहीं आता में महान हूँ। मेने कहा भगवान् ऐसे ही चिल्ला रहा है महान हो, हमें याद दिलाया कि तुम महान आत्माएं हो पहचानो अपने को।

में सोचा करता हूँ बाबा भी बैठ कर जब हम सब के बिच बैठता है तो सोचता हो होगा ना, आत्मा है ना परमात्मा सोचते तो होंगे कि में कितना समझा रहा हूँ कि तुम बहोत महान हो और इनकी समज में ही नहीं आ रहा है, कहाँ है यह सब? तो में देख रहा था उसे कि नहीं उतर रही उसके अंदर यह बात कि में एक महान आत्मा हूँ और जिस दिन उतर जाएँ बस सब कुछ खुल जाएगा। वोह अभिमान, वोह अहम सब डाउन, जगह ही नहीं लेकिन किसी के ऊपर सूक्ष्म अहम का प्रभाव जन्म जन्म का है वोह और इतना ज्यादा है कि इससे आत्मा छूट नहीं पा रही है हम सब बचेंगे इससे। अनुभव करना है निरहंकारिता में कितना सुख है, कितनी सफलता है जीवन में।

ऐसे गुण हम कुछ ले लें संतुष्टता। इस बार तो बाबा ने केह दिया लास्ट मुरली में संतुष्टता महान शक्ति है, पहली बार कहा ऐसे। संतुष्ट हो जाएँ हम, संसार में भी आज असंतोष बढ़ रहा है हम संतुष्ट हो जाएँ। अपने से बात करें **भगवान् को पाकर भी यदि हम संतुष्ट ना हुए तो कब होंगे? हमें इस सत्य को मान लें कि यदि संगम पर हम संतुष्ट ना हुए तो चारो युगो में नहीं हो पाएंगे। सतयुग में भले ही असंतुष्ट है नहीं लेकिन स्थिति, पद काफी कम हो जाएगा।** संतुष्ट होना है, ईश्वरीय प्राप्तियों में भी संतुष्ट और सांसारिक जीवन कि जो भी व्यवस्था किसी के पास है उस में भी संतुष्ट। गर्मी में भी संतुष्ट, तो वरसाद में भी संतुष्ट, बहोत शर्दी में भी संतुष्ट। ध्यान देंगे अब गर्मी बहोत बढ़ेगी, वैज्ञानिओने तो डिक्लेअर किया हुआ था ना यह साल सब से गरम साल होगा में भी बहार था देखा बहोत गरम है। गर्मी एक चीज है लेकिन गरम हवाएं चल रही हो तो बहोत भारी पड़ता है मनुष्य को, उसमें भी संतुष्ट। बरसात भी बहोत होंगी इस साल भी हो सकती है प्रकृति अब पूरा बदला लेने पर उतारू है, विध्वंस करेगी अब ओले पड़ गए कल तो, एक तरफ बहोत गर्मी और दूसरी तरफ आधा घंटा ओले पड़े। तो प्रकृति पूरी इमबैलेंस में है उसमें भी हम संतुष्ट और याद रखेंगे बाबा कि एक बहोत सुंदर बात अति अति सुंदर, सुंदर में जब कहता हूँ उसका अर्थ होता है बहोत गुह्य और पावरफुल - **यदि तुम योगयुक्त रहोगे तो तुम्हारे सामने यदि शस्त्र धारी व्यक्ति भी आएगा तो उसके शस्त्र भी फ़ैल हो जायेंगे, वोह शस्त्र चलना ही भूल जाएगा।** दूसरा - **योगयुक्त रहने से प्रकृति जो संघार करती आ रही है तुम्हारे पास आते ही शांत हो जायेगी, तुमहरि सुरक्षा करेगी।**

शिवशक्ति। हम शिवशक्तियां है शिव और शक्ति कंबाइंड हो यह है शिवशक्ति केवल हम शिवशक्ति है यह नहीं शिव और शक्ति साथ साथ हो इस स्वरुप में अर्थात योगयुक्त रहने में बहोत बड़ी शक्ति है। तो यह दो बाबा के महावाक्य है

७५ कि मुरली के है। बड़ा शस्त्र धारी व्यक्ति भी तुम्हारे सामने हो तो या तो वोह शस्त्र चलना भूल जाएगा या शस्त्र काम नहीं करेगा। बाबा उदाहरण देते थे कि शक्तियों के सामने बड़े बड़े राक्षक आते थे और सामने आते ही भेंस बन जाते थे। भेंस का अर्थ है भेंस बुद्धि, बुद्धि डल, क्या करने आये थे भूल गए यह हमारे वाइब्रेशन्स का प्रभाव है। वोह इसी लिए है कि वोह राक्षक भेंस बन गए, भेंस बुद्धि बन गए बुद्धि जो कुछ बुरा करने आये थे वोह विस्मृति हो गई। वाइब्रेशन्स पड़ते ही दृस्टि पड़ते ही सब कुछ भूल गये।

तो बहोत बड़ी शक्ति हमारे योग में रहेगी इसके अनुभव करने है। और भी धारणाओ कि बहोत सारी बातें है साक्षी दृस्टा होना, अनशकसत वृत्ति रखना, गुण ग्राही रखना, गुण ग्राही बन कर रहना, निर्दोष दृस्टि रखना, सब से प्रेम कि भावना रखना बहोत बड़ी धारणा। सब के लिए शुभ भावनाएं रखना इनके अनुभव करने है कि शुभ भावनाएं रखने से कैसे दुसरो कि भावनाएं बदल जाती है, शुभ भावनाएं रख दिए जाएँ तो कैसे शत्रु मित्र बन जाते है इसके अनुभव बढ़ाने है सब को। तो हमारा जीवन स्वयं भी धारणा युक्त हो जाएँ, चरित्रवान जीवन कि जो बाबा ने कहा है वोह प्रैक्टिकल हमारा जीवन हो वोह किताबो में ना हो वोह हमारे जीवन में लिखा गया हो। ऐसी अथॉरिटी, अथॉरिटी मन जब हम दुसरो को कहेंगे तो वोह भी तुरंत धारण करेंगे। मेने पीछे भी एक बात कही थी बहोत अच्छी बात है जो सेवा में रहते है सभी के लिए बहोत अच्छी बात है हम चाहे मुख से कितना भी अच्छा ज्ञान दें, चाहे हम कितना भी सुंदर भाषण कर लें क्लास करा लें लेकिन सुनने वाले धारण उतना ही करेंगे जितना हमने किया है। हम एक घंटा सुंदर से सुंदर भाषण करेंगे तैयार कर के चिंतन करके अच्छी अच्छी पॉइंट लिख के गहरी से गहरी बात सुना दें लोग वाह वाह तो करेंगे, कितनी गहरी बातें बतायी लेकिन बहार जाते ही सब भूल जाएगा धारण नहीं होगा। धारण वही होगा जो हमने धारण किया है अनुभव करने है इसके। प्रभाव वास्तव में हमारे वाइब्रेशन्स का पड़ता है, हमारी अथॉरिटी जो बन गए हम अनुभवों कि उससे जो वाइब्रेशन्स फैलते है प्रभाव उनका पड़ता है।

सेवा चौथा सब्जेक्ट। क्या अनुभव करेंगे सेवा में? बहोत सेवा कर रहे है लोग धूम मचाये हुए है जहाँ तहां, सेवा सफल किसके होती है? जिसमें निमित भाव, निर्माण भाव और निर्मल वाणी हो पहला अनुभव। बहोत सर्व श्रेस्ठ यदि अनुभव कि बात करें तो बाबा ने कहा सेवा करने वालों के वाइब्रेशन्स और स्थान के वाइब्रेशन्स जितने पावरफुल होंगे सेवा स्वतः ही होगी अनुभव करने कि बात है। नेगेटिव अनुभव सब देख चुके है उनसे भी सिख लेना है वोह भी अथॉरिटी होती है ना? सेवा में स्वार्थ किस तरह विघ्न कारी बनता है इस अनुभव को देखते हुए हम निस्काम भाव से सेवा करें। तीनो सेवा एक साथ करें सकास देने कि सेवा कितनी बड़ी है, सेवा से कितने ख़ुशी और बल मिलता है इसके अनुभव करें। बीमारी भी आ गयी जीवन में जिसने बहोत सेवाएं कि है सच्चे दिल से उसकी बीमारी जल्दी ही चली जाएंगी। और जिसने सेवाएं नहीं कि है उसको कांटा भी लग गया ना तो दर्द बढ़ते बढ़ते बढ़ते आखिर ऑपरेशन करना पड़ेगा। सेवाओं का बल चाहे वोह तन कि सेवा हो, धन कि हो, वाचा कि हो सब का बहोत बल मिलता है। धन कि सेवा कि धन कि कमी होगी नहीं, बल मिलेगा समस्यायों में, कई लोग सोचते है धन कि सेवा कि क्या जरुरत है धन कि सेवा करने वाले तो बहोत लोग होते है धनवान यह नहीं सोचना है। सच्चे दिल से जो भी आपके पास है जितना भी आप कर सकते है सच्चे दिल से तन कि सेवा भी और धन कि सेवा भी करनी है। अपने धन का सुख मिलेगा जीवन में नहीं तो धन भी तो दुःख दाई हो रहा है आजकल, धन बहोत दुःख दाई हो गया है लोगो के लिए धन समस्यायों का कारन बन गया है बहुतो के लिए। हमारा धन हमारे लिए सुख दाई हो जाएँ तो ईश्वरीय कार्य में जरुर लगाना है, सेवाओं का बल अनुभव करना है जीवन में।

तो यह सब बातें चारो सब्जेक्ट ही है। सेवाओं के क्षेत्र में यदि हमें फूल मार्क्स लेने है तो बाबा एक बात बहोत अच्छी कहते आयें मुझे याद है बहोत समय पहले कि बात बाबा ने कहा जो सेवा तुम्हे मिली है उसे यदि तुम सच्चे दिल से

स्वयं संतुष्ट रहते हुए सब को संतुष्ट करते हुए करते हो उसी सेवा से फूल मार्क्स मिल जायेंगे। कभी यह भी कहा हर तरह कि सेवा करो यह नहीं हम भाषण करते है हमें केह दिया गया शब्जी काट दो तो लज्जा आने लगे यह नहीं। जितना आनंद बड़ी बड़ी सभाओ में भाषण करने में आता हो उतना ही आनंद झाड़ू लगाने में भी आयें यह सच्ची सेवा है। सेवा हमारे अहम ना बढ़ा रही हो, सेवा हमारे अहम नष्ट कर रही हो यह सच्ची सेवा है। ऐसा नहीं विआपी कि सेवा करते करते हम भी विआपी बन जाएँ, अब हमें बहोत कुछ चाहिए, मान सम्मान भी बहोत चाहिए इससे सेवा का बल नहीं मिलता यह हो जाता है कहीं कहीं। हम तो सेवा कर ही रहे है सब को मुक्त करने के लिए और यदि हम ही मान सम्मान के बंधन में बांध गए तो हमारी सेवाएं भी फलीभूत नहीं होती है।

तो हम हर तरह कि सेवा करें आप सोचते होंगे हम तो परिवारों में रहते है हमारा क्या? हम तो अपने परिवार कि सेवा कर रहे है यह क्या करेंगे फिर? बोलो इसका उतर? हम अपने घर को बाबा का यज्ञ मान लें यहीं से आप संकल्प करो मेरा जो घर है, मेरी जो सम्पन्ति है, मेरा जो परिवार है बच्चे है वोह सब बाबा के है, उसका यज्ञ है। यहीं से दृस्टि दो अपने परिवार और घर को तो आप जो भी सेवा करेंगे वोह यज्ञ सेवा माना जाएगा। हमारी सेवाएं विशेष कर आप लोग परिवारों में रहते हुए परिवारों में एक दूसरे को सुख दें, उसके दुःख कम करें अपने व्यवहार से ख़ुशी बांटें, ध्यान दें इन चीजो पर। केवल मांगे नहीं दूसरे लोग हमें सम्मान दें, दूसरे लोग हमारी बात मानें यह मांग है समज रहे है ना सभी? दाता बन जाएँ। सुख दे परिवार में एक दूसरे को, एक दूसरे के दुखो को हरने वाले बन जाएँ, देखो कितना मजा आएगा। खुशियां भरो सभी के जीवन में।

कोई बीमार हो गया उसे दबाओ नहीं, टॉर्चर ना करदो बार बार बीमार रहते है, काम नहीं होता है, सारा पैसा तुम पे ही खर्च हो रहा है यह सब नहीं कोई किसी के ऊपर पैसा नहीं खर्च कर रहा है, क्या कहता है ज्ञान? सब अपना अपना कर्ज लेने आयी होगी वोह आत्मा आपके पास जिसके बिमारियों पर आपको खर्च करना पड़ रहा है वोह ऐसे ही नहीं खर्च करा रहे है। इन सब चीजो को जानते हुए सेवा भाव अपना लें परिवारों में वहीँ से आपको नंबर मिलेंगे और वहीँ लौकिक सेवा आपको बल प्रदान करेगी। जिसके पास जो क्वालिटी हो वोह उससे सेवा करें, यज्ञ सेवा का मौका भी सब को मिलता है थोडा बहोत, जितना मिले उसे भी बड़ी नम्रता पूर्वक सेवा करते चलें।

तो चारो सब्जेक्ट के हमारे फूल मार्क्स हमें सम्पूर्ण बनाएंगे, बाप सामान बनाएंगे। तो सभी ध्यान देंगे इन बातों पर मुरलियों कि स्टडी फिर से कर लें सभी, जिनको यह अच्छी गहरी मुरली चली है ७५ में थोड़ी सी मुरलियां है उनकी स्टडी कर लें आपको और गहरी बातें मिल जायेगी।

-: ओम शांति :-

-: क्लास के चुने हुए पॉइंट्स :-

- ✓ बाबा कहते थे रोज सवेरे उठे कर एक बार अपने श्रेस्ठ भाग्य का गुणगान स्वयं करो दिल प्रसन्नता से भर जाएगा, कितना सुंदर भाग्य मिला है हम सभी को। सब से बड़ा भाग्य तो येही कि भगवान् सामने
- ✓ बाबा ने सम्पूर्ण ज्ञान आत्मा का दिया है पहली गहरी बात सब जानते है केवल हमें याद करना है आत्मा में ८४ जन्मो का सम्पूर्ण पार्ट रिकार्डेड है सब भरा हुआ है। आत्मा सूक्ष्म उसमें सम्पूर्ण पार्ट भरा हुआ है, क्या इसको भी हम अपने अनुभवों में ला सकते है?
- ✓ हम यह जानते है वोह सब जगह नहीं है हमारे शरीर में नहीं है पर योगयुक्त होकर हम उसे अपने साथ रखते है ना? वही बात कितनी डिवाइन है कि वोह हमारे अंदर नहीं लेकिन हमारे साथ है। जैसे ही हम उससे योगयुक्त होते है तो उसका और हमारा साथ हो जाता है।
- ✓ कहा जाता है भगवान् को जानने के बाद और कुछ जानने कि आवश्यकता नहीं रहती। क्या हमें यह अनुभव हो रहा है कि उसे जान लेने के बाद हम ने सब कुछ जान लिया है, उसे पा लेने के बाद और कुछ पाने कि इच्छा आवश्यकता नहीं रहती क्या यह हमारा अनुभव हो गया है कि उसे पाने के बाद हम भी इतने तृप्त हो गए हो कि अंदर से आवाज आयें अब और कुछ नहीं चाहिए। जो कुछ पाना था वोह पा लिया।
- ✓ ड्रामा का अंतिम सुंदर सीन जब यात्रा कि समाप्ति आयी तो भगवान् हमारा मित्र बन गया, हमारी यात्रा पर हमारा साथी बन गया और कहा अपने सारे बोज मुझे दे दो ।
- ✓ हम शरीर में ऐसे रहते हो मानो यहाँ रहते ही नहीं ऊपर ही ऊपर, निरकारी स्थति, अशरीरीपन और निरकार दोनों सामान है लगभग इसके बहोत अच्छे अनुभव हो जाएँ।
- ✓ ज्ञान का सब्जेक्ट भी बहोत बड़ा लेकिन अनुभव हमारे बढ़ते है योग कि साधनाओ से।
- ✓ योग के सुंदर अनुभव तब तक नहीं होते जब तक हम कर्मयोगी ना बने, कर्मयोग के अनुभव हो उसमें हमें यह बहोत अच्छा अनुभव होगा कि परमातम शक्तियां हमारे साथ काम कर रही है।
- ✓ यदि तुम्हारी स्थिति रिफाइन हो तो तुम उतने ही समय में दस गुना काम कर सकते हो अनुभव करना है। यदि तुम साक्षी दृस्टा होकर रहो तो एक मास का काम एक घंटे में पूर्ण हो जाएगा।
- ✓ में एक महान आत्मा हूँ इस स्वमान में स्थित होकर दूसरे को आत्मा देख कर ज्ञान दो तो तुम्हारे बोल बहोत प्रभावशाली हो जायेंगे। दूसरे व्यक्ति का अहंकार भी नष्ट हो जायेंगे
- ✓ भगवान् को पाकर भी यदि हम संतुष्ट ना हुए तो कब होंगे? हमें इस सत्य को मान लें कि यदि संगम पर हम संतुष्ट ना हुए तो चारो युगो में नहीं हो पाएंगे। सतयुग में भले ही असंतुष्ट है नहीं लेकिन स्थिति, पद काफी कम हो जाएगा।
- ✓ भगवान् को पाकर भी यदि हम संतुष्ट ना हुए तो कब होंगे? हमें इस सत्य को मान लें कि यदि संगम पर हम संतुष्ट ना हुए तो चारो युगो में नहीं हो पाएंगे। सतयुग में भले ही असंतुष्ट है नहीं लेकिन स्थिति, पद काफी कम हो जाएगा।
- ✓ योगयुक्त रहने से प्रकृति जो संघार करती आ रही है तुम्हारे पास आते ही शांत हो जायेगी, तुमहरि सुरक्षा करेगी।